कागज नहीं कह सकता

मां का दर्द

राजस्थान इतिहास कांग्रेस के सत्रों के दौरान जब व्या□याताओं ने कन्या □ूण हत्या पर पेपर पढ़ते हुए पत्रवाचन किए तो दाती महाराज ने कांफ्रेंस को विराम देते हुए कहा कि यह विषय कागजों का नहीं रहा है। कागज से निकलकर इस विषय पर मंथन करने की जरूरत है। मंथन के लिए समाज से जुड़ना होगा। वह भी अशिक्षित नहीं, शिक्षित समाज से, क्योंकि शिक्षित समाज में यह कुरीति ज्यादा है। कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए महिलाओं को भी जागरूक होना होगा और इसके खिलाफ आवाज उठानी होगी। यह आवाज परिवार के खिलाफ नहीं कुरीति और पाखंड के खिलाफ है। उन्होंने कहा कि एक मां अपनी बेटी को मारने जा रही है, और उसका दर्द एक कागज कहेगा, यह हो नहीं सकता। पाली शनिधाम के प्रणेता महामंडलेश्वर परमहंस दाती जी महाराज ने कहा कि बेटी है तो सृष्टि है, बेटियों के बिना हम विनाश के उस मार्ग पर खड़े रह जाएंगे जहां हमें बचाने वाला कोई नहीं मिलेगा। कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए मंच और गोष्ठियों के भरोसे न रहकर दिल से संकल्पबद्ध होना होगा। हमें झांकना होगा अपने भीतर कहीं हम इस कृत्य में शामिल तो नहीं हैं। यह विषय बुद्धिजीवियों का है। अगर बुद्धिजीवी समाज जागरूक हो गया तो मुझे नहीं लगता यह कुरीति लंबे समय तक टिक पाएगी। दाती ने कहा कि मैं विद्वानों के बीच झोली फैलाने आया हूं कि अब कन्या भ्रूण हत्या बंद होनी चाहिए। यह मेरे जीवन भर का संकल्प है जिसके लिए मैं घर घर जाऊंगा। इसके बाद वक्ताओं ने बिना पेपर के पत्रवाचन दिए।